



શ્રી શંતિનાય - મુક્તિ સમ્બગજ્ઞાન અભ્યાસક્રમ

શંતિનાય એકેડમી, શ્રી પદ્મપ્રભસ્વામી જૈન મંદિર, સ્ટેશન રોડ, ચાણીસગામ - ૪૨૪ ૧૦૧.

સમ્બગજ્ઞાન પ્રવેશકા

અભ્યાસક્રમ નં :

◆◆ અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર ◆◆

જૂન - 2022

અનુષ્ઠાનિક નંબર

૧

ગામ _____

વિદ્યાર્થીનું નામ _____

પ્રશ્ન-૧ ખાલી જગ્યા

- (૧) વિદ્ય
- (૨) અનંત વાર્તા
- (૩) દ્વારા રૂણ
- (૪) જીવનાનુભૂતિ
- (૫) કાસકાય
- (૬) એવાકાર
- (૭) કલ્યાણ
- (૮) સાધ્યાર્થકાર્ય
- (૯) સુવા
- (૧૦) માનવબંધુ
- (૧૧) જીર્ણ પુનરભ
- (૧૨) દ્વાન્ય
- (૧૩) દ્વાર્ધીયસર્વ
- (૧૪) પંચાન્દુર
- (૧૫) સ્વાધીન
- (૧૬) મ્યારી
- (૧૭) પરિ(ઓ)મ
- (૧૮) પુંદ્રોદર્શ
- (૧૯) માનુષનાની
- (૨૦) હાકાર

પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં

- (૧) ચાંગુણ - લેટુ
- (૨) જાભળજાત
- (૩) પુરીનિનુભૂતિ
- (૪) જીવારી
- (૫) મનુષ્યચિવરીન
- (૬) રાજકુમાર
- (૭) ઇચ્છા
- (૮) વિશર્વાન
- (૯) રૂણ
- (૧૦) રચાવર
- (૧૧) નિતશાંક
- (૧૨) અનુભાવાન
- (૧૩) કાચબો
- (૧૪) મહાવીરસ્વામી
- (૧૫) દોસરુ

પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ

- (૧) દીતન્ય
- (૨) લોક આ
- (૩) દાનસપાનિકાય
- (૪) અશાની.

પ્રશ્ન-૪ જેડકાં જોડો

- | | | | |
|-----|-----|-----|-----|
| (૧) | (૨) | (૩) | (૪) |
| (૧) | ૨ | ૧ | ૧૪ |
| (૨) | ૮ | ૮ | ૨૦ |
| (૩) | ૪ | ૪ | ૨૧ |
| (૪) | ૫ | ૫ | ૧૬ |
| (૫) | ૩ | ૩ | ૧૦ |

પ્રશ્ન-૫ સંખ્યામાં જવાબ

- | | |
|------|-----------|
| (૧) | ૮૨ (૮૨) |
| (૨) | ૫૦ (૫૦) |
| (૩) | ૧૯ (૧૬) |
| (૪) | ૫૪ (૬૪) |
| (૫) | ૬ (૬) |
| (૬) | ૮ (૮) |
| (૭) | ૫૨૫ (૫૨૫) |
| (૮) | ૨ (૨) |
| (૯) | ૧૨૮ (૧૨૮) |
| (૧૦) | ૬ (૬) |

પ્રશ્ન-૬ નું કોઈ કોઈ કોઈ નાથ

- | | | | |
|-----|-----|-----|-----|
| (૧) | (૨) | (૩) | (૪) |
| ✓ | 10 | X | 17 |
| X | 23 | ✓ | 18 |
| ✓ | 11 | X | 5 |
| X | 14 | ✓ | 20 |
| ✓ | 21 | X | 16 |

$$+ + + + + + + + =$$

પ્રશ્ન ૧-મેળવેલ ગુણ + પ્રશ્ન ૨-મેળવેલ ગુણ + પ્રશ્ન ૩-મેળવેલ ગુણ + પ્રશ્ન ૪-મેળવેલ ગુણ + પ્રશ્ન ૫-મેળવેલ ગુણ + પ્રશ્ન ૬-મેળવેલ ગુણ + પ્રશ્ન ૭-મેળવેલ ગુણ + પ્રશ્ન ૮-મેળવેલ ગુણ = કુલ ગુણ.

રીમાર્ક

ત્રયાસનારની સહી

प्रश्न - ८ अतिशय अटली के वस्तु ज्ञानमां तीर्थकर भगवान् सिवाय कोईनी पासे होयनहीं. ऐवो लेमनी प्रभाव छे. शानावणीय, दर्शनावणीय, अंतराय अने भोएनीय आ त धाती झर्मोनी ज्या यता असिहैत्य
१. लगवांत ने सर्वलोकालोकनु रवाहप गाहो अने हिमे खेवा कैवलरान अने कैवलदर्शन प्राप्त याय छे. आ कर्मजाय चायाधी हैवता औ सभवसरण नी रथना करे हिम्बारे ~~करे~~ ११ अतिशयो उत्पन्न याय छे. ते अतिशयो भलुने खेटले कर्मजायभतिशय. सभवसरण नी रथना; सर्वालिमुखता; हिम, भनुध्य, तिर्यक भवने स्वलाघामां लोदा करावे ऐवी वाणी; आसपासना विस्तारमांथी ज्यराहि रोगीनो नाश, परस्परना लेनी शांति, पाकनो नाश करनार लीड वर्गे इतिनी भलाव, भर्की आदिउपद्रव; अनिष्टप्ती अने अनावृष्टि, हुर्लिङ नी भलाव, कुन्हे असंभव; भस्तक नी पाहण भार्मंडल आ ११ अतिशयो अे कर्मजायभतिशय अतिशयो छैक्किविहार सभवे २५ थोळन शुद्धी होय
२. मानव भवनी दुर्लभता सभभवता शास्त्रोना २० दूर्लांतमांथी कुहु दूर्लांत ले लोज्जननु दूर्लांत छे. एक यक्कवाच राम लिङ्कुक पर पसन्न थार्ड वरदान मांगवा करे छे. लिङ्कुक पीतानी वर्तमान स्थिति भेई रामने दर्शीज भरपैर लो चाय तेवी गोठवणा करवा करे छे. ते प्रभाणी राम दर्शीज अेक-अेक नागरीक नाद दरे लोज्जन करावा नगरज्ञानी ने द करे छे अने शुभार्मंडल राजपूत्साद मांथी करे छे. वर्धी वित्त्या पण लिङ्कुक ने राजपूत्साद ज्वा लोज्जन क्यांची न मध्य अनी फ्रीथी राजपूत्साद ज्वा लोज्जन नी यत्परी अगी पदाते माटे छप्पंडना दरेक नागरीक ना धरमां लोज्जन करीले अनिवार्य छे. शास्त्राकारो करे छे. याचना करावाथी लिङ्कुक ने कृदाय यक्कवर्ती ना दरे लोज्जन करवानु ज्ञालाभ्य प्राप्त याय परंतु प्रभाद्वरा थार्ड ते भनुध्य भवने व्यर्थ गुमावे छे लेमने भनुध्य भवनी प्राप्ति दुर्लभ छे.
३. इन्है अवधिरान थी अधिभदेवनी राज्यालिधिक नी सभव भवी राज्यालिधिक क्वी. अने विनिला नगरी ज्ञान भलु घृणीतला ना भूतभ राम याय. लेमणी उग्र, लोग, राज्यान्य, कात्रिय कुलो नी स्थापना करी. राम तरीके पीतानी आचार भणी भलुये असी, भसी, दृष्टि नी व्यवस्था भवतीवी. पार्य प्रकारना अने प्रत्येकना वे परा प्रकार अेम १०० प्रकार ना शिल्पनु रान आप्यु... रांदावानी विद्या शीखवाडी. पुरुषो नी ७२ अने ज्ञानीओनी ५४ कलाओ भलुये पीताना पुरी अने पुत्रीओ सहित जवाने शीखवाडी. सायीज १८ लिपिओ अने गणित शीखवाड्यु. भलु नितिमय, झूलस्थापक, आचारक, विद्योक्तारक छिता. लेमणी लोकीने राज्य-अनुरासन अंगी विभाभाभां आपी अने लोकी अे भूमाणी वर्तवा भाग्या.
४. भंत्रीमां भंत्राद्विराज अने प्रथम भंगल सभानभविकार महारंग मां असिहैत्य अने सिज्ज देवीने तेमज आयाय उपाध्याय अने साधु गुरुओने अेम पांचे परभीष्ठ भगवांती ने नभस्कार करवामां आवे छे. लक्ष्मी, नम्रता, सन्मान आदृ, विनाय आदे आ भंग ना लोभ नाम 'पंच भंगलसुग' अने 'पंच परभीष्ठस्तव' छे. लेनायी भव नाश पानी, भीड़ पद भवे शीघ्रपूर्वना सारलूत आ भंत्रने सर्व सभवे रभराग ज्वा शास्त्रार्थी कह्यु छे. पंच परभीष्ठ भगवांता ना सर्व गुभ भवीने १०८ याय दे भाटे नवकार नी १०८ भणाकानी भाला गत्वावामां आवे छे. तीना एक अक्षर थी ७ सागरीप १ पद थी ५७ सागरीपम अने ८ पद थी ५०० सागरोपम ना पापीनो नाश याय छे. ८ लाख अप नरक गति हुर कर्त्तव्य जिनपद प्राप्त करावे छे. काउसंगमां १ नवकारभंग नी भप १८, ५३, २९८ यत्योपमनु देवताए आयुध्य लंघावे छे
५. ज्वेन दर्शन ना बंदारणी भुल पायी 'नवतात्प' सभभवे छे. आ लत्वी ज्वनना उत्कर्ष भाटे भरेखरा मार्गदर्शक लरीके छे. तीर्थकर भलुये छे धर्मापदेशाना करे छे, तेने विवाह भगवांती सूत उपे गुंद्ये छे. ते दरेक शूतमां आ नवतात्प नी सभावेश याय दे जराने भलुने देशना आ नवतात्प नी भहार हीनी ज नथी. लेमनी दरेक देशना मां आ नवतात्प नी भवतात्पमांथी कोइ तत्पनो सभावेश याय छे. भलुनी नवतात्प भूममां नव नी अंकडी आ नवतात्प ने दर्शावे छे. ते १४ पुर्व नी सार दे भाटे पंचपरभीष्ठभव ज्वेवाय छे. शुभ, अज्ञान, पाप, पुण्य, आश्रम, संवार, निर्जन, अंधा, भोज आ नवतात्प भवतात्पवी, सभजवावी अने ज्वनमां उत्तात्पवी सभवग्रदर्शन नी व्याप्ति याय छे अथवा सभयग्रनिर्मल याय छे. जे असार संसार ने तारवा भाटे मद्दृप याय छे. नव तत्व उपर श्रे ४ सभयग्रदर्शन छे.